प्रातः क्लास 8-7-68 ओमशान्तिः पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। रूहानी बच्चे ही इन कानों द्वारा सुनते हैं। बेहद का बाप बच्चों को कहते हैं अपन को आत्मा समझ बैठो। यह घड़ी2 कहना पड़ता है। जिनकी बुधि बाहर में चक्र लगाती होंगी वह सुनने से झट सीयरम हो जावेंगे। अपन को आत्मा समझ सुनेंगे। बच्चे समझते हैं हम यहां आये हैं देवता बनने। हम एडाप्ट बच्चे हैं। हम ब्राहमण पढ़ते हैं। क्या पढ़ते हैं। ब्राहमण से देवता बनने पढ़ते हैं। जैसे कोई कालेज में बच्चे पढ़ते हैं समझते हैं हम अभी पढ़ कर फ्लाना बनेंगे। बैठने से ही झट समझेंगे तुम भी ब्रहमा के बच्चे ब्राहमण बनते हो। तो समझते हो हम ब्राहमण से देवता बनेंगे। गाया हुआ भी है मनुष्य से देवता... परन्तु कौन मनुष्य से देवता बनते हैं। हिन्दु सभी तो देवता बनते नहीं। वास्तव में हिन्दु तो कोई देवता है नहीं। आदी सनातन कोई हिन्दुधर्म नहीं है। कोई से भी पूछो हिन्दु हिन्दुधर्म किसने स्थापन किया? तो मुंझ जावेंगे। यह अज्ञान से नाम रख दिये हैं। हिन्दुस्तान में रहने वाले अपन को हिन्दु कहते हैं। वास्तव उनका नाम भारत है नर्क हिन्दुस्तान। भारत सच्चखण्ड था न कि हिन्दुस्तान खण्ड। यह है ही भातर। तो उन्हों को भी यह पता नहीं है कि यह कौन सा खण्ड है। अपवित्र होने कारण अपन को देवता तो समझ न सके। देवी-देवतायें पवित्र थे। स्त्री-पुरुष दोनो ही पवित्र थे। अभी वह धर्म है नहीं। और तो सभी धर्म आते हैं। बुध का बोध धर्म। इब्राहीम का इस्लाम धर्म, क्राईस्ट का क्रिश्चनधर्म। बाकी हिन्दुधर्म का तो कोई है नहीं। यह हिन्दुस्तान नाम तोफनेर ने रखा है। पतित होने कारण अपन को देवी धर्म का समझते ही नहीं। देवी धर्मभ्रष्ट-कर्मभ्रष्ट है। इसलिए अपन को हिन्दु कह देते हैं। बाप ने समझाया है आदी सनातन देवी देवता धर्म। पुरानी ते पुरानो। शुरु का धर्म कौन सा है ? देवी-देवता। हिन्दु नहीं कहेंगे। अभी बाप ने समझाया है तुम आदी सनातन देवी देवताधर्म के हो। स्कूल में पढ़ने लिए बैठते हैं समझते हैं हम डाक्टरी पढ़ते हैं। डाक्टर बन जावेंगे। तुम भी पढ़ते हो। समझते हो हम मनुष्य से देवता बन जावेंगे। अभी ब्रहमा के एडाप्ट बच्चे ब्राहमण हो गये। हम ब्राहमण से देवता बनने लिए पढ़ते हैं। ऐसे नहीं कि हिन्दु से देवता बनने लिए पढ़ते हैं। ब्राहमण से देवता बनते हैं। देवता पद प्राप्त कराने लिए ही बाप को आना पड़ता है। याद भी सभी उनको ही करते हैं कि आकर पवित्र नई दुनिया की स्थापना करो। पतित-पावन बाप को ही समझते हैं न कि कृष्ण को। ऊंच ते ऊंच भगवान गाया जाता है। वह है निराकार। यह अच्छी रीत धारण करना है। अभी तो देखो कितने ढेर धर्म हैं। एड होते ही जाते हैं। जब भी कहां भाषण आद करते हो तो यह समझाना अच्छा है। अभी है कलियुग। सभी धर्म अभी तमोप्रधान आयरन एजेड हैं। चित्र पर बैठ तुम समझावेंगे तोफिर वह घमण्ड टूट जावेगा। मैं फ्लाना हूं यह हूं। समझेंगे हम तो तमोप्रधान हैं। पहले2 बाप का परिचय दे फिर दिखाना है यह पुरानी दुनिया बदलनी है। दिन-प्रति-दिन चित्र भी शोभनिक होते जाते हैं। चक्र पर तुम बहुत क्लीयर समझा सकते हो। जैसे स्कूल में नशे बच्चों की बुधि में होते हैं। तुम्हारी बुधि में फिर यही रहनी चाहिए। नम्बरवन जैसे यह है। ऊपर में त्रिमूर्ति भी है। दोनो गोले भी हैं। सतयुग और कलियुग। नई दुनिया और पुरानी दुनिया। अभी हम पुरुषोत्तम संगम युग पर हैं। यह पुरानी दुनिया विनाश हो जावेगी। एक आ आदी सनातन देवी देवता धर्म स्थापन हो रहा है। तुम यह जानते हो तब तो कहते हो ना। और कोई भी मनुष्य यह बातें नहीं जानते हैं। कोई= कोई भी विद्वान पंडित आद यह नहीं बताते। बेहद का बाप ही तुम बच्चों को समझाते हैं। वही सृष्टि के आदि मध्य-अन्त को जानते हैं। दूसरा कोई जानते ही नहीं। हिन्दुधर्म के तो कोई चित्र ही नहीं हैं। तुम हो ही आदी सनातन देवी-देवता धर्म के। हिन्दुधर्म तो है नहीं। जैसे सन्यासियों ब्रहम रहने के स्थान को ईश्वर समझ लिया है वैसे ही हिन्दुस्तान में रहने वालों ने हिन्दुधर्म समझ लिया है। उनका भी फर्क है तुम्हारा भी फर्क है। देवी-देवता नाम तो बहुत ऊंच है। कहते हैं यह तो जैसे देवता है। देवी-गुण वाला। जिनमें अच्छे गुण होते हैं तो ऐसे कहते हैं। इनमें देवताई गुण है। तुम समझते हो जो भी बड़े2

पंडित आद हैं संस्कृत आदपढ़ने वाले वह इस आदी सनातन देवी देवता धर्म के बात भी नहीं जानते। भल ब्र नाम भी लेते हैं शिव परन्तु उनका आक्युपेशन बतलाते नहीं। कृष्ण का, विष्णु का बताते हैं। यह भी नहीं समझते राधे-कृष्ण ही ल०ना० बनते हैं। ल०ना० ही विष्णु बनते हैं। यह बातें अभी तुम जानते हो। राधे कृष्ण ही स्वयंवर पश्चात् ल०ना० बनते हैं। उनको विष्णु भी कहा जाता है। चित्र भी सभी के हैं परन्तु कोई भी मनुष्य नहीं जिसको यह बुधि में हो कि राधे कृष्ण ही ल०ना० बनते हैं। तुम बच्चों को अभी बाप बैठ कर समझाते हैं। बाप को ही सभी याद करते हैं। ऐसा कोई मनुष्य नहीं होगा जिसके मुख में भगवान न हो। अभी भगवान तो कहा जाता है निराकार को। निराकार का भी अर्थ नहीं समझते हैं। कितना मुंझते हैं। बिल्कुल ही एडीयट्स तमोप्रधान बन गये हैं। तुम बच्चे समझते हो बराबर हम पहले तमोप्रधान ईडीसट थे। कुछ भी नहीं जानते थे। कहते भी हैं ना तुम तो जनावर पत्थर बुधि हो। तुम पढ़ते नहीं हो। पत्थर बुधि हो क्या। स्टुडन्ट ठीक न पढ़ेंगे तो टीचर ऐसे ही कहेंगेना। अभी तुम सभी कुछ जानते हो। पत्थर बुधि से पारस बुधि बन जाते हो। यह नालेज भारत-वासियों के लिए ही है। न कि विलायत वालों के लिए। न उन्हों का कब ख्याल रखना है। वह तो आते ही पीछे हैं। तुम्हारा कनेक्शन नहीं है। बाकी यह समझा सकते हो इतनी बुधि कैसे हुई है। और खण्ड आते गये हैं। वहां तो भारत खण्ड के सिवाय और कोई खण्ड नहीं रहेगा। अभी वह एक धर्म है नहीं। बाकी सभी खड़े हैं। बनीयन ट्री का विशाल स्प्युरेट है। आदी सनातन देवी-देवता धर्म का फाउन्डेशन है नहीं। बाकी सारा झाड़ खड़ा है। तुम कहेंगे आदि सनातन देवी देवता धर्म था न कि हिन्दु। तुम अभी ब्राह्मण बने हो देवता बनने के लिए। पहले2 ब्राह्मण जरूर बनना पड़े। शुद्र वर्ण से ब्राह्मण वर्ण में आये आये हो। शुद्र वर्ण और ब्राह्मण वर्ण कहा जाता है ना। शुद्र डिनायस्टी नहीं कहेंगे। शुद्र वर्ण ब्राह्मण वर्ण। वह डिटी डिनायस्टी नहीं कहेंगे। अभी उनका नाम बदल हिन्दु डिनायस्टी कर दिया है। अपवित्र भी तब से ही बने हैं। हिन्दु राजाएं रानियां हैं। पहले देवी देवताएं महाराजा महारानी थे। यहां है हिन्दु महाराजा महारानी। भारत तो एक ही है फिर वह अलग यह अलग कैसे हो गये। उन्हों का नाम निशान ही गुम कर दिया है। सिर्फ चित्र है। नम्बरवन है सूर्यवंशी। राम को सूर्यवंशी नहीं कहेंगे। अभी तुम आये हो सूर्यवंशी बनने लिए न कि चन्द्रवंशी बनने के लिए। यह राजयोग है ना। तुम्हारी बुधि है हम यह बनेंगे। दिल में खुशी रहती है बाबा हम हमको यह पढ़ाते हैं। महाराजा-महारानी बनने। सत्यना० सच्ची कथा यह है। आगे जन्म-जन्मान्तर तुम सत्यना० की कथा सुनते आये परन्तु वह सभी हैं झूठी कथाएं। अभी तुम बच्चे समझते हो वह था भक्ति मार्ग। यह है ज्ञान मार्ग। भक्ति मार्ग में कब मनुष्य से देवता बन न सके। मुक्ति जीवन मुक्ति पा न सके। सभी मनुष्य मुक्ति जीवनमुक्ति चाहते जरूर हैं। अभी सभी हैं बन्धन में। ऊपर से आत्मा आज भी आवेगी तो जीवनमुक्ति में आवेगी। न कि जीवन बन्धन में। आधा समय जीवनमुक्ति आधा समय बन्धन में जरूर जावेगा। यह खेल बना हुआ है। इस बेहद के खेल के हम सभी एक्टर्स हैं। यहां आते हैं पार्ट बजाने। हम आत्माएं यहां के निवासी नहीं है। हम आत्माएं परमधाम के निवासी हैं। यहां आये हैं पार्ट बजाने। कैसे आते हैं यह भी बातें बाप बैठ समझाते हैं। कैसे आत्माएं यहां ही पुनर्जन्म लेती रहती है। तुम बच्चों को शुरू से लेकर अन्त तक सारी वर्ल्ड की हिस्ट्री जागरफी बुधि में है। दुनिया में यह कोई नहीं जानते हैं। बेहद का बाप ऊपर में रहते क्या करते है कुछ भी नहीं जानते। इसलिए उन्हों को कहा जाता है तुच्छ बुधि। तुम भी तुच्छ बुधि थे। भल कितने भी बड़े2 वजीर अमीर एम०पी० आद है उनहों को तुच्छ बुधि ही कहेंगे। तुम जानते हो, तुमको ही वाण्रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का राज समझाते हैं। तुम गरीब साधारण सभीकुछ जानते हो। बहलपति करोड़पति कुछ भी नहीं जानते हैं। तो तुच्छ बुधि ठहरे ना। तुम हो स्वच्छ बुधि। तो देखो तुम अभी क्या से क्या बन रहे हो। स्कूल में भी पढ़ाई से ऊंच पद पा सकते हैं। यह तुम्हारी पढ़ाई फिर है ऊंच ते ऊंच। जिससे तुम राजा पद पाते हो। वह तो दान-पूण्य करने से राजा वगैरह जन्म लेने से प्रिन्स बनते हैं। फिर राजा बनते हैं।

परन्तु तुम इस पढ़ाई से राजा बनते हो। बाप ही कहते हैं मैं तुम बच्चों को राजयोग सिखाता हूं। सिवाय बापके और कोई राजाई नहीं पढ़ाते हैं। बाप ही तुमको पढ़ाते हैं तुम फिर दूसरों को समझाते हो। बापराजयोग सिखलाते हैं। तो तुम पतित से पावन बन जाओ। अपन को आत्मा समझ और निराकार का बाप को याद करो। तो तुम पवित्र बन जाओगे। फिर चक्र को जानने से चक्रवर्ती राजा सतयुग में बन जाओगे। यह समझाना तो बहुत सहज है। अभीदेवी-देवता धर्म का कोई भी है नहीं। सभी कनवर्ट हो गये हैं और धर्मों में। तुम कोई भी समझाओ तो पहले2 अक्षर ही बाप का दो। बाप समझाते हैं। और धर्मों में कितने चले गये हैं। बुद्धि बोधी मुसलमान ढेर बन गये हैं। तलवार के जोर से बहुत मुसलमान बने हैं। बोधी भीबहुत बने हैं। एक बार ही स्पीच की तो हजारों बोधी बन गये। क्रिश्चन लोग भी ऐसे आकर स्पीच करते थे तुम्हारे भगवानराम की स्त्री चुराई गई। तुमको लज्जा नहीं आती। तुम्हारे कृष्ण के लिए कहते हैं वह इतना विकारी था जो भगा कर ले गया। सारा दोष हीउन पर रख दिया है। कितना विकारी था। हमारे क्रिश्चन की ऐसी कोई बात नहीं। हमारे पास जो रहते उनको यहां वालों से तीनगुण जास्ती वेतन मिलता है। हमारे पास बहुत सुख है। ऐसे2 बातें सुनाकर कितने क्रिश्चन बना देते। सब से जास्ती आदमशुमारी उन्हों को है। तो अभी तुम बच्चों की बुधि में सारा सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। तब ही बाप कहते हैं तुम हो स्वदर्शनचक्रधारी। स्वदर्शनचक्र विष्णु को दिखाते हैं। मनुष्य यह थोड़े ही समझते कि विष्णु को क्यों दिया है। स्वदर्शनचक्रधारी कृष्ण को या नारायण को कहते हैं। यह भी समझाना चाहिए ना इन्हों का क्या कनेक्शन है। कृष्ण को नारायण को, विष्णु को यह चक्र क्यों दिया है। है तीनों एक ही। वास्तव में यह स्वदर्शन चक्र तो तुम ब्राह्मणोंके लिए ही है। तुम ही स्वदर्शनचक्रधारीबनते हो ज्ञानसे। बाकी तो स्वदर्शनचक्र कोई मारने काटने का नहीं है। यह ज्ञान की बातें हैं। जितना तुम्हारा यह स्वदर्शनचक्र ज्ञान का फिरेगा उतना ही तुम्हारे पाप भस्म होंगे। बाकी फिर काटने की कोई बात नहीं। चक्र कोई हिंसा का नहीं है। चक्र तो तुमको अहिंसक बनाता है। कहां की बात कहां ले गये हैं। सिवाए बाप के कोई समझा न सके। तुम मीठे2 बच्चों को अथाह खुशी होनी चाहिए। अभी तुम समझते हो हम आत्मा हैं। पहले तुम अपन को आत्मा भी भूल गये तो घर भी भूल गये। आत्मा क्या है, यह भी भूल गये थे। आत्मा को तो फिर भी आत्मा कहते थे। परमात्मा के लिए तो ठिक्कर भितर में कह देते हैं। आत्माओं के बाप को कितनी गाली देते हैं। आत्मा के लिए नहीं कहेंगे कि ठिक्कर भितर में है। कण कण में आत्मा है। परमात्मा के लिए कितनी गाली दे देते हैं। जनावरों को तो बात ही नहीं। पढ़ाई आद मनुष्यों की ही होती है। अभी तुम जानते हो हम इतने जन्म यह बने हैं। 84 जन्म पूरेकिये। बाकी 84 लाख तो है नहीं। मनुष्य कितना अज्ञान अंधेर में है। इसके लिए कहा जाता है ज्ञान सूर्यप्रगटा अज्ञान अंधेर विनाशा। आधा कल्प द्वापर कलियुग है अंधियारा। और आधा कल्प सतयुग त्रेता हैसोझरा। दिन और रातसोझरे और अंधियारे का यह ज्ञा है। यह बेहद की बात है। आधा कल्प दिन आधा कल्प रात। अंधियारे में आधा कल्प कितनी ठोकरें खानी पड़ती है। बहुत भटकना होता है। स्कूल में जो पढ़ते हैं उनको भटकना नहीं कहा जाता। सतसंगों में मनुष्य कितना भटकते हैं। आमदनी कुछ भी नहीं होती। और ही घाटा। इसलिए उनको भटकना कहा जाता है। भटकते2 धन-दौलत आद सभी गंवायेकंगाल बन पड़े हो। इस पढ़ाई में अभी जो जितना2 अच्छी तरह धारण कर और करावेंगे उसमें फायदा ही फायदा है। ब्राह्मण बन गया फायदा ही फायदा है। तुम जानते हो हम ब्राह्मण ही स्वर्गवासी बनते हैं। स्वर्गवासी तो सभी बनेंगे फिर उसमें भी ऊंच पद पाने तुम पुरुषार्थ करते हो। बाप कहते हैं अभी सभी की वानप्रस्त अवस्था है। तुम खुद कहते हो बाबा आप हमको वानप्रस्त से पवित्र दुनिया में ले जाओ। दुनिया तो एक ही है। वह है आत्माओं की दुनिया। निराकारी दुनिया। यह है साकारी दुनिया। तुम बच्चों की बुधि में है साकारी दुनिया कितनी बड़ी है। निराकारीदुनिया कितनी छोटी है। यहां तुमको रहने करने लिए, घूमने-फिरने लिए कितनी

बड़ी ज़मीन है। वहां तो वह बात ही नहीं। शरीर ही नहीं, पार्ट बजता ही नहीं। स्टार्स मिशल आत्माएं खड़ी हैं। यह कुदरत है ना। सूर्य-चान्द सितारे कैसे खड़े हैं रोशनी देने लिए। तुम कह न सकेंगे वह किस आधार पर खड़े हैं। आत्माएं भी ब्रह्म महत्तत्व में खड़ी हैं किस आधार पर। अपने आधार पर नैचरल खड़ी है। पहले2 तो यह समझना है हम दुःखी जो बने हैं सो फिर सुखी कैसे बनें। बाप को ही पुकारते हैं। हे ओ गाडफादर। हमको दुःख से आकर लिबरेट करो। गाईड भी करो। हमने बहुत यज्ञ तप आद किये हैं परन्तु आप से मिलने का रास्ता मिला ही नहीं। बाप कहते हैं मैं तो ड्रामा अनुसार अपने समय पर ही आता हूं। वह है भक्ति का कलट। यह है ज्ञान का कलट। अभी भक्ति कलब पूरा होता है। ज्ञान कलट शुरू होता है। ज्ञान जिन्दाबाद भक्ति मुर्दाबाद। यह भी तुम बच्चे जानते हो भक्ति मुर्दाबाद हो जावेगा। फिर ज्ञान ही ज्ञान रहेगा। भक्ति का नाम नहीं। भक्ति है तो ज्ञान का नाम निशान नहीं। यह भी बाप बैठ बतलाते हैं। बाप तो है निराकार। उनको रथ भी जरूर लेना पड़ता है। जिस रथ पर ही कल्प2 आते हैं। शिव बाबा कहते हैं मैं कल्प2 इस रथ पर ही आता हूं। इनको भी पहचान देता हूं। इनको ही बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में मैं इन में प्रवेश करता हूं। तुम बहुतों को समझाते हो। कहां पूरा समझा नहीं सकते हो इसलिए रोज2 बाबा समझाते हैं। तो पक्के हो जावें। प्रदर्शनी म्युजियम आद में तुम्हारे पास कितने आते हैं। पुरुषार्थ करते हैं रोज आते हैं फिर बच्चे बन जाते हैं। बच्चों में भी जो बाप की सेवा में लग जाते हैं वही ऊंच पद पाते हैं। जितना जो सर्विस करते हैं। यह तो समझते ही बाहर में रहने वाले यहां रहने वालों से जास्ती सर्विस करते हैं। जास्ती सर्विस करने वाले ही ऊंच पद पाते हैं। इसलिए भील और अर्जुन का मिशाल है। अर्जुन ने हरा लिया। भील होशियार निकला। तो बाप समझाते हैं ऐसे मत समझो बाहर रहने वाले ऊंच पद नहीं पा सकते हैं। बहुत अच्छी रीत पा सकते हैं। बाहर में रहकर भी बहुत सर्विस कर सकते हैं। वान्धे लियां है, घर बैठे भी कितना याद करती है। सुना है बाबा आया हुआ है ब्रह्मा के तन में। बहुतों को साक्षात्कार भी होता रहता है। सफेद पोश का। फिर बाल कृष्ण का भी होता है। ऐसे नहीं कि कृष्ण के भक्त बहुत भक्ति करते हैं तब साक्षात्कार होता है। नहीं। अनायास ही साक्षात्कार हो जाता है। उनको दिखलाते हैं ब्रह्मा द्वारा तुम यह पद पा सकते हो। ड्रामा में यह नूंध है। बाकी करने-कराने वाला कोई है नहीं। तुम कदम2 जो भी चलते हो वह ड्रामा अनुसार। ड्रामा तुमको पुरुषार्थ भी जरूर करावेंगी। मनुष्य तो ड्रामा को जानते ही नहीं। वह समझते हैं ईश्वर सर्वशक्तिवान है। ईश्वर कहते हैं ड्रामा सर्वशक्तिवान है। मैं भी ड्रामा के बन्धन में हूं। जो तुम्हारी सर्विस में आकर उपस्थित हुआ हूं। मेरे हाथ में नहीं है कोई दुःखी हो और मैं आ जाऊं। ऐसे तो बहुत ही दुःखी होते रहते हैं। पैन्शन पड़ती रहती है ऐसे मैं नहीं आता हूं। मैं ड्रामा के बन्धन में हूं। पूरे 5000 वर्ष बाद मुझे आना ही है। यह बाप आकर समझाते हैं। तो इस समय तुम बच्चों को पुरुषार्थ करना है ऊंच पद पाने लिए। पुरुषार्थ बिगर कब प्रारब्ध मिलती नहीं। बच्चो रोवेंगा तब ही उनको पानी मिलेगा। पुरुषार्थ से ही प्रारब्ध मिलती है। यह है तुम्हारा बहुत ऊंच पुरुषार्थ। बाप कहते हैं मुझे याद करो। जितना याद की यात्रा में रहेंगे उतना पाप कटते जावेंगे। नालेज यह भी बाप बहुत समझाते हैं। चक्र का नालेज भी समझो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना भी सहज है। तुम बाप के बच्चे ब्राह्मण बने हो सो फिर देवता जरूर बनेंगे। पुरुषार्थ करते रहते हो जैसा पुरुषार्थ ऐसा प्रारब्ध। बाप समझाते तो बहुत अच्छी तरह से हैं। कोई अच्छी रीत धारण करते हैं। बच्चों को यह तो पता है यह नालेज घर2 में पहुंचानी है। बाप का परिचय देना है। बाप है ही स्वर्ग का रचयिता। शिवजयन्ति का अर्थ क्या है। शिव है बेहद का बाप। शिवजयन्ति माना नई दुनिया की जयन्ति। नई दुनिया जयन्ति माना आदी सनातन देवी-देवता धर्म की जयन्ति। कितनी सहज बात है। बाप बैठ बच्चों को प्यार से समझाते हैं। धारण कराते हैं जितना2 धारण और करते रहेंगे उतना ही ऊंच पद पावेंगे। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडमार्निंग। और नमस्ते।